REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

हनुमानगढ़ जिले की जनसंख्या परिवर्तन के स्थानिक व सामयिक आयाम

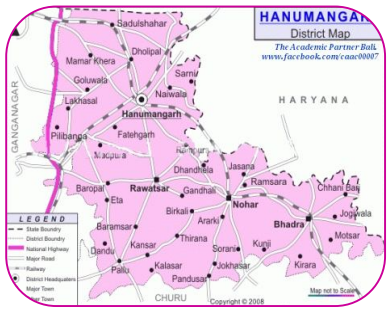

डॉ. एस. एस. खींची[1] , ओम प्रकाश महिया [2]
[1]सह आचार्य ,भूगोल विभाग ,डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय श्रीगंगानगर (राजस्थान).
[2]शोधार्थी एम.फिल. , भूगोल विभाग ,डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

प्रस्तावना

जनसंख्या मानव संसाधन के रूप में है। मानव संसाधन का अध्ययन एवं उसका विश्लेषण करना अधिक महत्वपूर्ण है। जनसंख्या के अध्ययन का विषय वैज्ञानिकों व भूगोलवेत्ताओं में आकर्षण का केन्द्र रहा है।

किसी भी क्षेत्र की वास्तविक ताकत उसकी मानव शक्ति की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

जनसंख्या स्वयं में एक संसाधन है। परन्तु विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों के अन्वेषण, उपयोग और प्रबन्धन में भी जनसंख्या की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जनसंख्या की प्रकृति और विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन प्रागतिहासिक काल से प्रारम्भ हो गया था। पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या और उससे सम्बन्धित तथ्यों के अध्ययन में वृद्धि हुई और कालान्तर में अनेक वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण सिद्धान्त व कार्य सम्पन्न किये।

जनसंख्या के विभिन्न पक्षों का समय अन्तराल अध्ययन व परिणामों के बारे में अवगत कराने हेतु महत्वपूर्ण वैज्ञानिकों ने कार्य किये व दिशा–निर्देश दिये।

विश्व में जनसंख्या तथ्यों व अध्ययन के लिए वैज्ञानिक वाग 1959, स्मिथ 1960, जान्सन 1965 द्वारा प्रस्तुत किये।

जनसंख्या और उसके विविध संलग्न के सोपानों के ऊपर अति प्राचीन काल से ही कार्य किये जा रहे हैं किन्तु 1950 और 1960 के दशक में इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण कार्य किये गये हैं। जनसंख्या और जननांकिकी दोनों विषय एक दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित है। जननांकिकी जनसंख्या का अभिप्राय है प्राचीन सभ्यता काल से ही अध्ययन का एक पहलू बना रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या वृद्धि तथा उसके प्रभावों को विस्तृत रूप से विश्लेषण करने की कोशिश की गई है। साथ ही जनसंख्या वृद्धि के कारण दुष्प्रभावों तथा जनसंख्या नियंत्रण के उपायों पर प्रकाश डाला गया है–

1. सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास किया गया है कि जिले में (1991–2011) में जनसंख्या वृद्धि अधिक क्यों है,
2. पिछले दस वर्षों में जनसंख्या में क्या स्थानिक एवं सामयिक परिवर्तन हुए, को जानना तथा उनका विश्लेषण करना भी है,
3. जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारको का अध्ययन करना प्रमुख उद्देश्य हैं,
4. प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के प्रयासों और उपायों का किस सीमा तक क्रियान्वयन हुआ है और क्या ये प्रभावी हुए हैं, को भी उद्देश्यों में सम्मिलित किया गया है,
5. सरकार द्वारा चलाये गये जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों का अध्ययन करना भी उद्देश्य है

परिकल्पना

हनुमानगढ़ जिले में नगरीय व कृषि क्षेत्र अधिक है जिसके कारण उद्योगों में व नगरीकरण में प्रगति हुई है और जनसंख्या में लगातार बढ़ोतरी हुई है और हो रही है तथा हनुमानगढ़ शहर की जनसंख्या में तीव्रगति से

बढ़ोतरी हो रही है, इससे आने वाली युवा पीढ़ी के लिए रोजगार की समस्या भी धीरे–धीरे बढ़ती जा रही है। उद्योगों के विकास के फलस्वरूप हनुमानगढ़ जिले के विकास को एक नई दिशा मिली है। उद्योगों के विकास के साथ–साथ इस जिले में कृषि की स्थिति को भी नया बल मिला है जो कि ट्यूबवैलों व नहरों के विकास के कारण सम्भव हुआ है। इससे आम व्यक्ति की आर्थिक ग्रामीण क्षेत्रीय स्थिति को बढ़ावा मिला है, जिसके कारण प्राथमिक व्यवसाय से द्वितीय, तृतीय व चतुर्थक व्यवसाय में प्रगति होगी।

अध्ययन क्षेत्र भौगोलिक स्थिति –

हनुमानगढ़ जिला $29^0 5'$ से $30^0 6'$ उत्तरी अक्षांश एवं 74^0 से $75^0 3'$ पूर्वी देशान्तर में स्थित है।

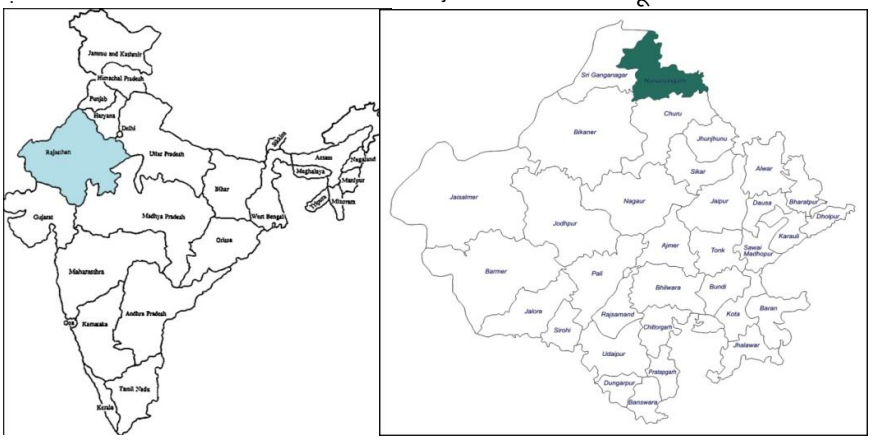

जलवायु–जिले में जलवायु अर्द्धशुष्क है। यहां पर मौसम एवं जलवायु सम्बन्धी विभिन्नताएँ पायी जाती हैं, ग्रीष्मकाल में मौसम अधिक गर्म तथा शीतकाल में अधिक ठंडा रहता है।

न्यूनतम तापमान 1.2 डिग्री व अधिकतम तापमान 49 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है।

यहाँ औसत वर्षा 2012–2015 के अनुसार 27.35 सेन्टीमीटर है और (2015) में यहां वास्तविक वर्षा 34.55 सेन्टीमीटर हुई है।

शीतकाल में तापमान न्यूनतम स्तर पर पहुँचने से उच्च वायुदाबीय दशाएँ विकसित हो जाती है। कभी–कभी शीत ऋतु में मावठ भी हो जाती है।

हनुमानगढ़ जिला जनसंख्या वितरण

जिले के 1991 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 1220333 थी उनमें पुरूष 645205 व स्त्रियाँ 575128 थी।

तालिका –1 हनुमानगढ़ जिला जनसंख्या वितरण 1991–2011

वर्ष	कुल जनसंख्या	पुरुष	स्त्री
1991	1220333	645205	575128
2001	1518005	801486	716519
2011	1774692	931184	843508

स्त्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा – 2015 पेज नं. 6

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 1774692 हो गई। इनमें पुरूषों की जनसंख्या 931184 है व स्त्रियों की जनसंख्या 843508 है। जनसंख्या में गुणोत्तर वृद्धि देखी गई यह समय के अनुसार बदलता परिवेश आधुनिक सुविधाएँ आदि के प्रभाव से उत्पन्न हुई है।

हनुमानगढ़ जिला ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या

हनुमानगढ जिले के ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या के वितरण में असमानतायें है। 1991 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 1220333 थी। इसमें ग्रामीण जनसंख्या 1002410 व नगरीय जनसंख्या 21792 थी इस जनसंख्या में समय अनुसार वृद्धि हुई और जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 1774692 हो गई इसमें ग्रामीण 1424228 जनसंख्या व नगरीय 350464 जनसंख्या विद्यमान है।

हनुमानगढ जिला : जनसंख्या घनत्व

घनत्व किसी क्षेत्र के मानव संसाधन व विकास को दर्शाता है। जनसंख्या घनत्व इस क्षेत्र में उपलब्ध उद्योगिक विकास, परिवहन सुविधा, जल की उपलब्धता, स्वास्थ्य सेवाओं आदि को दर्शाती है। जनगणना 1991 के अनुसार हनुमानगढ़ जिले का जनसंख्या घनत्व 126 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। इसमें ग्रामीण घनत्व 104 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर व नगरीय जनसंख्या घनत्व 3853 था।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले का कुल घनत्व बढ़कर 184 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया इसमें ग्रामीण जनसंख्या घनत्व 149 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर व 4753 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर नगरी जनसंख्या घनत्व है।

हनुमानगढ़ जिला लिंगानुपात

हनुमानगढ़ जिले का लिंगानुपात 1991 में 891 था इसमें ग्रामीण लिंगानुपात 897 व नगरीय लिंगानुपात 867 है। इस समय ग्रामीण लिंगानुपात अधिक था और जिले का लिंगानुपात 2011 में बढ़कर 906 हो गया। इसमें ग्रामीण 907 व नगरीय 902 है। यह लिंगानुपात सामान्य स्थिति को दर्शाता है।

हनुमानगढ़ जिला साक्षरता

हनुमानगढ़ जिले में 1991 की जनगणना के अनुसार साक्षरता दर 30.99 प्रतिशत थी इसमें पुरुष 42.76 प्रतिशत व स्त्रियाँ 17.29 प्रतिशत साक्षर थी उस समय शिक्षा में गुणवत्ता की कमी थी। पर जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार कुल साक्षरता 67.13 प्रतिशत हो गई इसमें 77.41 प्रतिशत पुरुष व 55.83 प्रतिशत स्त्री साक्षरता है।

हनुमानगढ़ जिले जनसंख्या की दस वर्षीय वृद्धि दर

हनुमानगढ़ जिले में प्रथम जनगणना 1991 में हुई जिसमें जिले की कुल जनसंख्या 1220333 थी इसके बाद 2001 में जनसंख्या में (+) 297672 वृद्धि दर्ज की जो 24.39 प्रतिशत थी। इसके बाद जनगणना 2011 की अनुसार जिले की जनसंख्या में (+) 256687 वृद्धि दर्ज की गई जो (+) 16.90 प्रतिशत वृद्धि हुई है। यह वृद्धि दर गत दस वर्षीय वृद्धि दर की तुलना में कम वृद्धि दर है। यह वृद्धि दर समाज में शिक्षा का विस्तार परिवार नियोजन से कम हुई है।

हनुमानगढ़ जिला अनुसूचित जाति जनसंख्या वितरण

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 494189 हो गई। इसमें 258352 पुरूष, 235837 स्त्री जनसंख्या हो गई इस प्रकार जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि दर्ज की गई।

हनुमानगढ़ जिला अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वितरण

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यह जनसंख्या 14289 हो गई इसमें 7578 पुरुष व 6711 स्त्रियों की जनसंख्या है। 1991 के बाद 2011 के आंकड़ों आकलन करने पर जिले में अनुसूचित जनजाति में भारी वृद्धि हुई है और जनसंख्या में तीव्रतम बदलाव हुये हैं।

जनसंख्या वृद्धि के कारण

1. उच्च जन्मदर
2. निम्न मृत्युदर
3. विवाह उम्र
4. गरीबी एवं पिछड़ापन
5. अशिक्षा एवं अज्ञानता
6. सामाजिकता
7. परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रति उदासीनता
8. औद्योगिक उन्नति
9. कृषि क्रांति
10. विज्ञान और टैक्नोलॉजी विकास

जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ

1. बेरोजगारी में वृद्धि
2. सीमित संसाधन
3. जल संकट
4. खाद्यान्न उत्पादन में कमी
6. आवासीय समस्या
7. निर्धनता वृद्धि

जनसंख्या समस्या के समाधान के उपाय

1. **विवाह की आयु में वृद्धि**
2. **उत्पादन में वृद्धि**
3. **परिवार कल्याण कार्यक्रमों का विस्तार**
4. **शिक्षा का प्रसार**
5. **नगरीकरण**
6. **औद्योगिक विकास**
7. **परिवहन सुविधाओं का विकास**

निष्कर्ष

हनुमानगढ़ जिले की अधिकांश जनसंख्या कृषि प्रधान होने के कारण गांवों में निवास करती है। पर कृषि में लागत के अनुरूप उत्पादन व मूल्य न मिलने के कारण कृषि कार्य छोड़कर रोजगार के लिए नगरों की और प्रवास कर रहे हैं जिससे नगरीकरण की समस्या बढ़ रही है। नगरीय विस्तार से पेयजल, यातायात, भवन, आदि समस्यायें बढ़ जायेगी। लगातार जनसंख्या वृद्धि से बेरोजगारी बढ़ रही है। जिससे समाज व शहरों में लूट–मार, तनाव, सामाजिक अपराध बढ़ रहे हैं।

जनसंख्या वृद्धि से कृषि भूमि पर लगातार दबाव बढ़ रहा है। कृषि भूमि कम होने से खाद्यान्न अभाव की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

बढ़ती जनसंख्या से लोगों की आर्थिक गतिविधियाँ भी प्रभावित हुई है। अतः शीघ्र ही जनसंख्या को नियंत्रण करना चाहिए नहीं तो आने वाले समय में समस्या विकट हो जायेगी। जनसंख्या के इस बदलते स्वरूप को सभी प्रकार से नियंत्रित किया जाना चाहिये। सरकार व जनता सभी को कंधे से कंधा मिलाकर इस महत्ती कार्य में हाथ बंटाना चाहिए।

बढ़ती जनसंख्या की रोकथाम के लिए सरकार को विशेष जनसंख्या नीति को अपनाना चाहिए व जनसंख्या से उत्पन्न समस्या का समय रहते निस्तारण किया जाना चाहिए। सरकार को जनभागीदारी से समाज को जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों के बारे में जागरूक कर उचित परामर्श देना चाहिए, जिससे जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chadna, R.C. (1980) – An introducation to Population Geography, Kalyani Publishers, New Delhi.
2. Bhatt Kashmir, (1991-1993) – Population Growth and Land use Changes In Jaipur City: 1971-1991, Annats of the Rajasthan Geographical Association, Vol. XIII.
3. Agarwal, S.N. (1977) – Population Problem, MC Graw Hill, New Dehli.
4. Clarke John. 1 (1972) Population Geography Pergamon Press, Oxford.
5. Ghosh D. (1996) – Pressure of Population and Economic Effieciency, Indian Council of world Affairs, New Delhi.
6. Verma, S.D. (1956) – "Density Pattern of Population in Punjab", "Nation Geographical Journal of India".
7. Prakash, O. (1970) – "Pattern of Population in Uttar Pardesh", "National Geographical Journal of India" 15, 150-160.
8. Ghosh G.S. (1961) "The Regionalism in Sex Composition on India's Population" Rural Sociology Vol 26.
9. Mitra, Ved (196) – Education in Ancient India. Arya Book Depot, New Delhi.
10. Chandna, R.C. (1979) "India's Population Policy" Asian Profile, Honkong, Vol.7, No.4
11. Govt, of India (2000) – National Population Policy – 2000, Planning Commission of India, New Delhi.

डॉ. एस. एस. खींची
सह आचार्य ,भूगोल विभाग ,डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय
श्रीगंगानगर (राजस्थान).